कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

रामत्व का धनुष उठाकर, धर्म की प्रत्यञ्चा चढ़ायें।
स्नेह और सौहार्द्र बाण से, रावणत्व की लंका ढायें।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 29, अंक 2

अप्रैल-जून 2018 (विक्रम संवत् 2075)

सम्पादक

स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–

तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :

161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग

2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7

दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :

29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट

(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)

कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :

13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,

गुलमोहर पार्क के पास

हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–

विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

❖ संपादकीय... 2

❖ प्राचीन धरोहर रोहतासगढ़ तीर्थयात्रा 3

❖ वेदना के स्वर 5

❖ असीम शक्ति-आत्मविश्वास 6

❖ शिमला में विवेकानन्द छात्रावास का... 7

❖ वनयात्रा के अनुभव 8

❖ हमें कार्य का, विचारों का प्रचार... 9

❖ भाग्यनगर में अखिल भारतीय... 9

❖ ईश वंदना और राष्ट्रभक्ति के स्वर... 10

❖ 1855 में संथाल परगना से जगी थी... 12

❖ अनपेक्षित और अनायास मिली... 13

❖ वृक्षारोपण 14

❖ अनुकरणीय 15

❖ स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 15

❖ सामूहिक विवाह आयोजन 15

❖ अभिनंदन 15

❖ बोधकथा... परोपकार 16

❖ कविता ...मुक्तक 16

संपादकीय...

सर्वमंगल के समस्त सूत्र पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से जुड़े हैं

चतुर्थ अन्तरराष्ट्रीय योगदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकारें। सारा विश्व 21 जून को योगमय हुआ। लगभग डेढ़ सौ देशों से सामूहिक योग आयोजनों की सूचनाएं मिली हैं। इससे भी बड़ा सुखद आश्चर्य यह है कि पचासेक मुस्लिम देशों में उत्साहपूर्वक भारत की इस देन को कृतज्ञ भाव से स्वीकार किया है। **'करो योग रहो निरोग'** का सामान्य सा सूत्र जन गण मन को सीधा समझ में आ गया और अनायास ही एलोपैथी के दुष्चक्र में फ़ंसा विश्वमानव जैसे त्राण पा रहा है। मात्र तीन ही वर्षों में भारत की यह उपलब्धि नए सूरज के उदय की घोषणा है मानो काली रात बीती और दिन का उदय हुआ। दिन हो गया है तो इसे 'अच्छा दिन' बना लेना आम आदमी के अपने वश की बात है। अपने श्रम और कौशल से अपना दिन अच्छा बनाने का सुख कुछ अलग ही है। योग धरती के मानव को स्वस्थ, परिश्रमी और आत्मनिर्भर बनाता है। परिणामत: गोस्वामी तुलसीदास की चौपाई चरित्तार्थ हुई सी लगती है- **दैहिक, दैविक भौतिक तापा, रामराज नहिं काहुंहि व्यापा।** भारत का योग विश्वमानव को त्रितापों के मुक्त होना सिखाता है। इस तरह भारत को सहज गुरुता दिलाता है। भारत के सनातन सांस्कृतिक प्रवाह में योग सिर्फ़ एक धारा है जिसका विश्वमानव ने बहुमान देकर अपने सुख का राजमार्ग पाया है। इसके सिवा संस्कृत, गीता, गाय, गायत्री, गंगा, भागवत, प्रकृति-पूजा आदि अनेक बलवती धाराएं और हैं जिनका साक्षात्कार होना अभी बाकी है। इन सबका सम्मिलित स्वरूप ही उत्सव-त्योहार बनकर भारतीय जीवन-पद्धति बनती है जिसे व्यवहार में हिन्दू धर्म कहा जाता है। समग्रता में हिन्दू धर्म विश्वमानव के सर्वमंगल का मन्त्र है। सर्वमंगल के समस्त सूत्र पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से जुड़े हैं। यह कोलकाता महानगर में सम्पन्न हुई श्रीरामकथा का सन्देश बना है। उपरोक्त सन्दर्भ के साथ यह अद्‌भुत संयोग बना कि गत पुरुषोत्तम माह में महानगर कार्यकर्ताओं के श्रम से वनवासी छात्राओं के निमित्त निर्माणाधीन **प्रीतिलता छात्रावास** के लिए धनसंग्रहार्थ रामकथा का सफ़ल आयोजन हुआ। कथावाचिका कल्याण आश्रम से जुड़ी वनवासी **विदुषी सुश्री विजया उर्मलिया जी** की सहज सरल व्याख्या ने गुणीजनों का मन मोह लिया।

श्रीराम के जीवनचरित्र से वन और वनवासी को निकाल दिया जाए तो श्रीराम भारत के अन्यान्य अनगिनत राजाओं में एक बनकर रह जाते कुछ भी उल्लेखनीय नहीं बचता। अर्थात् वनसंस्कृति और वनवासी ने राजा राम को भगवत्ता की ऊँचाई दी। सीधा समीकरण बनता है कि यह ऊँचाई भारत के सनातन सांस्कृतिक प्रवाह से प्राप्त होती है। एक और समीकरण भी आसानी से बनाया जा सकता है कि योग, श्रीराम, वनवासी और भारतीय संस्कृति आदि परस्पर पर्यायवाची हैं। 'भारतमाता की जय' का उद्‌घोष समग्रता में योग की जय, श्रीराम की जय, वनवासी की जय और भारतीय संस्कृति के सभी मानकों की जय है। इति शुभम् ■

स्नेहलता बैद

प्राचीन धरोहर रोहतासगढ़ तीर्थयात्रा

– महरंग उरांव, सह क्षेत्रीय संगठन मंत्री, झारखंड

उराँव समाज के पूर्वजों की प्राचीन धरोहर रोहतासगढ़ है। इसका दर्शन कर हर तीर्थयात्री का स्वाभिमान जाग उठता है और इस पुण्यभूमि को नमन कर पुण्यता की अनुभूति करता है। कैमूर पहाड़ी पर प्राचीन धरोहर रोहतासगढ़ अवस्थित है। यह हावड़ा-दिल्ली मुख्य रेलमार्ग से दक्षिण पूर्व दिशा में डेहरी ऑन-सोन रेलवे स्टेशन से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह किला भारत सरकार और राज्य सरकार के अधीन राष्ट्रीय स्मारक व पर्यटक स्थल है। इसे दर्शन-पूजन-नमन करने हेतु आज हजारों लाखों तीर्थयात्री व भक्तगण हर साल आते हैं।

इतिहास साक्षी है कि रोहतासगढ़ अति प्राचीन राष्ट्रीय धरोहर है। रोहतासगढ़ के विशाल भवन और परिसर को देखकर हम अनुभव कर सकते हैं। यहाँ का वैभव इतिहास के पन्नों में अंकित है। यह गढ़ शोध और अध्ययन का विषय भी है। रोहतासगढ़ राजस्व गाँव (बिहार) में है। यह राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व के नाम से जाना जाता है। इतिहासकारों और अपने पूर्वजों की मान्यताओं के अनुसार कुड़ख 'उरांव जाति' अति प्राचीन काल में रोहतासगढ़ के ही निवासी थे और उनका साम्राज्य भी था। उनके पूर्वज यहीं के थे। जनी-शिकार की गौरवगाथा इसी कला से संबंधित है। उरांव राजा की बेटी सिनगी दई और सेनापति की बेटी कैली दई ने मुगल पठान सैनिकों को युद्ध में तीन बार हराया। पुरुष वेश धारण कर युद्ध मैदान में अपनी वीरता दिखाई। उरांव महिलाओं के चेहरों पर तीन गोदना जीत की खुशी की पहचान है। यह परम्परा भी रोहतासगढ़ की है। परन्तु अन्तिम युद्ध में मुगल पठानों से कूटनीति एवं स्थानीय भेदिया के कारण उनकी हार हो जाती है। इतिहास गवाह है कि रोहतासगढ़ मे कई बार लगातार मुगलों से युद्ध होता रहा। अंततोगत्वा रोहतासगढ़ मुगल शासकों के अधीन हो गया। बाद में अंग्रेज भारत में आये और 1764 ई. में मीर कासिम को युद्ध में अंग्रेजों ने पराजित कर शासन व्यवस्था अपने हाथों में ले ली और यहाँ साम्राज्य स्थापित कर कई राज्यों में शासन करने लगे। रोहतासगढ़ की गौरवगाथा का सम्पूर्ण वर्णन करना असंभव है परन्तु संक्षेप में इतिहास को स्पर्श करने का प्रयास किया है।

उरांव समाज रोहतासगढ़ की गौरवगाथा, पूर्वजों की मातृभूमि को अपने जीवन में, हर पुण्य कार्य व उत्सव में सदा स्मरण करता रहा और इसीलिए पुण्यभूमि के दर्शन हेतु रोहतासगढ़ तीर्थ यात्रा 2006 से प्रारंभ हुई। तीर्थ यात्रा का उद्देश्य रोहतासगढ़ के इतिहास को जन-जन तक पहुँचाना और अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा विश्वास जगाना तथा सामाजिक जागरण करना है ताकि हम अपने पूर्वजों के सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक परम्परा के मार्ग पर चलते रहें। यह रोहतासगढ़ भारत का दार्शनिक, राष्ट्रीय स्मारक और पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित हो तथा इसकी सुरक्षा और संवर्द्धन राज्य सरकार और भारत सरकार करे- यही तीर्थयात्रा का मुख्य उद्देश्य है।

तीर्थयात्रा के प्रेरणास्त्रोत माननीय जगदेवराम उराँव वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। 1998 में सर्वप्रथम कल्याण आश्रम के कार्य को देखने हेतु उनका प्रवास रोहतास कैमूर पहाड़ी क्षेत्र में हुआ और उसी समय तीर्थयात्रा की कल्पना आई। 2006 ई. में जशपुर नगर से तेजूराम उराँव, जगेश्वर भगत, झारखण्ड क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री समीर उराँव, वर्तमान सांसद लोहरदगा, केन्द्रीय राज्यमंत्री राज्य सरकार के श्री सुदर्शन भगत, रिझु कच्छप-रांची, संदीप उराँव इत्यादि बंधुओं के नेतृत्व

में तीर्थयात्रा प्रारंभ हुई। स्व. नारायण भगत (ईटा ग्राम, लोहरदगा) ने सैकड़ों तीर्थयात्रियों को लेकर रोहतासगढ़ की परिक्रमा एवं भ्रमण किया। पूर्वजों का स्मरण कर पूजा की, करम देवता की सेवा की। अति प्राचीन रोहतश्व धाम में चौरासन मन्दिर, महादेव-पार्वती माता का पूजन किया। रोहतासगढ़ के वैभव व पुण्यभूमि का दर्शन कर सभी भावविभोर हो उठे। रात्रि निवास वहीं किया। सबने यात्रा की सराहना करते हुए हर वर्ष तीर्थयात्रा का कार्यक्रम हो, यह विचार दिया। तब से लगातार रोहतासगढ़ यात्रा सम्पन्न होती आयी है। 2007 में इस यात्रा ने मेला का रूप ले लिया। तीर्थ यात्रियों से आगमन से आस-पास के गाँव में किला परिसर गूँज उठा। इसी कार्यक्रम में बिहार प्रान्त के प्रचारक श्री अनिल ठाकुरजी, श्री डोमा सिंह, श्री अजय सिंह तथा श्री नगीना पाण्डेय के नेतृत्व में तीर्थ यात्रियों के साथ मा. जगदेवराम उरांव का भी किला परिसर में आगमन हुआ। सहभोज, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं सभाएं हुई। उस समय 3,000 तीर्थयात्रियों की उपस्थिति थी। 2013 ई. में रोहतासगढ़ का छायाचित्र प्रकाशित किया गया। साहित्य प्रकाशित हुए। बंगाल, ओड़िशा, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, बिहार, असम, प्रान्तों से तीर्थ यात्री आने लगे। छत्तीसगढ़ के रवि उराँव, कोरबा के नन्द कुमार, बीरबल सिंह, जशपुर के देवनन्दन सिंह इत्यादि बंधुओं के नेतृत्व में गाँव-गाँव से तीर्थ यात्री आने लगे और वापसी में करम डाल, मिट्टी, पत्थर लेकर घर में स्थापित करने लगे। समाज में जन-जागरण करते हुए रोहतासगढ़ के बारे में लोगों के बीच जाकर बताने लगे। इस प्रकार आज चारों तरफ रोहतासगढ़ की महिमा का गुणगान होने लगा है। 2015 में ही रोहतासगढ़ तीर्थ यात्रा में केन्द्रीय मंत्री मा. जुएल उराँव तथा केन्द्रीय राज्य मंत्री मा. सुदर्शन भगत, आगमन से किले के बारे में अच्छा प्रचार-प्रसार हुआ है। केन्द्रीय मंत्री जुवेल उराँव ने कहा कि रोहतासगढ़ का विकास हो व विकसित पर्यटक स्थल बने, इसके लिए सरकार से सहयोग का आश्वासन दिया। सभी तीर्थ यात्रियों को उन्होंने शुभकामनाएं दी। 2014 में संघ के क्षेत्रीय प्रचारक स्वांत रंजन जी, क्षेत्र संघचालक श्री सिद्धिनाथ सिंह का आगमन ही नहीं हुआ बल्कि यहाँ रात्रि निवास कर लोगों को आशीर्वचन भी दिये। रोहतासगढ़ तीर्थ यात्रा, संघ परिवार के सहयोग से सफल होती आ रही है। स्थानीय लोगों का भी सराहनीय योगदान रहता है। तीर्थयात्रा को सफल बनाने में रोहतास, तिलौथू, डेहरी और औरंगाबाद नगरों के बंधुओं का विशेष योगदान है। रोहतासगढ़ तीर्थ यात्रा की योजना से रोहतास, कैमूर के पठारी क्षेत्रों में काफी जागरण हुआ है। अपनी धर्म-संस्कृति, परम्परा, रीति-रिवाज को सुरक्षित रखने का संकल्प लोगों ने लिया है। रोहतासगढ़ किले के प्रति अटूट श्रद्धा-विश्वास रखते हुए और राष्ट्रीय स्मारक धरोहर की पहचान, महिमा को बनाये रखना हमारा परम कर्तव्य है, ऐसा कहा जा सकता है। पठारी क्षेत्रों का समाज अब जाग उठा है। अपने स्वत्व की रक्षा और अपने अधिकार की बातें करने लगे हैं। हर वर्ष किला परिसर में स्थानीय सहयोग से राष्ट्रीय त्योहार मनाया जाता है। रोहतासगढ़ के पूर्वजों का स्मरण तथा वीरांगना सिनगी दई-कैली दई की जय जयकार की उद्घोषणा हमारे कण्ठों से होती है। देश के कोने-कोने से तीर्थ यात्री जाति-पांति से ऊपर उठकर रोहतासगढ़ पुण्यभूमि का दर्शन करने आते हैं। श्रावणी मेला तथा महाशिवरात्रि में लाखों भक्तों का आगमन होता है। जलाभिषेक से भगवान शिव-पार्वती, गणेश, करम देवता तथा अन्य सभी देवी-देवताओं की पूजा कर मनोवांछित फल भक्तगण लेकर जाते हैं। यह सब ईश्वरीय कृपा ही है। ■

वेदना के स्वर

– सावित्री रावत, साल्टलेक समिति

उत्तिष्ठ-उत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुड़ध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्तं त्रैलोक्यं मंगलम् कुरु।।

प्रात: जब भगवान को जगाया जाता है तो यह प्रार्थना की जाती है-हे कमलाकान्त! हे गोविन्द! उठिए- तीनों लोकों का मंगल करिए। यह मंगल कामना केवल हिन्दू के लिए ही नहीं वरन् तीनों लोकों के चर-अचर, स्थावर-जंगम सब प्राणियों के लिए जाती है।

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' सनातन धर्म का मूल संस्कार तथा विचार है। यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी अंकित है।

कुछ राष्ट्रवादी दलों को छोड़कर प्राय: सभी दल धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस सनातन परम्परा को नकार रहे हैं। विश्व के सबसे पुरातन धर्म को टुकड़े-टुकड़े करने का दुष्प्रयास धर्मनिरपेक्षता की आड़ में चल रहा है। अभी हाल ही में लिंगायत को अल्पसंख्यक घोषित करने का जो कार्य किया गया है वह निश्चय ही देश की उदार छवि पर करारा प्रहार है। जैन, बौद्ध, आर्य समाज, लिंगायत, सिक्ख इत्यादि सभी विचारधाराएं सनातन से ही विकसित हुई हैं जो विशिष्ट समसामयिक परिस्थितियों के कारण है। मुझे पद्मश्री पण्डित सदाशिव रथ शर्मा जी का एक प्रसंग याद आ रहा है। एक बार वाराणसी में एक वृहद हिन्दू सम्मेलन हुआ था- जिसमें वाद विवाद का विषय था-''हिन्दू कौन?''। वैष्णवों ने कहा जो विष्णु को मानता है वही हिन्दू है। शैव ने कहा जो शंकर को मानता है वह हिन्दू है। शाक्तों ने कहा जो शक्ति को मानता है वह हिन्दू है। इस प्रकार भिन्न-भिन्न मतों के बीच पण्डित रथशर्मा ने कहा कि हिन्दू वह है जो ॐ को मानता है। ॐ ही शब्द ब्रह्म है। इसके लिए उन्हें समन्वयाचार्य की उपाधि से विभूषित किया गया था। उन्होंने कहा था कि हिन्दुओं का कोई भी मूल मंत्र ॐ के लगाये बिना पूर्ण नहीं होता है। यथा ॐ भूर्भुव: स्व: ॐ नम: शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय आदि।

अभी कुछ दिनों पूर्व हमारे प्रधानमंत्री नेपाल यात्रा पर गए थे। वहाँ उन्होंने मुक्तिधाम के दर्शन किए। यह स्थल सनातन धर्म की अत्यंत प्राचीन धर्मस्थली है। यहाँ पर हिन्दू एवं बौद्ध धर्म के अनुयायी साथ-साथ भावपूर्वक सेवा करते हैं। अतएव यह कहना कि हिन्दू धर्म से बौद्ध धर्म अलग है सर्वथा गलत है। हम उस उच्चतम धर्म परम्परा के अनुयायी हैं जो सर्व धर्म समभाव में विश्वास करती है। मेरा सभी राजनैतिक दलों से अनुरोध है कि अपनी क्षुद्र महात्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हमारे इस महान राष्ट्र के टुकड़े न करें। जय हिन्द! वंदे मातरम्!! ■

अमृत वचन

अपने आप को किसी एक पक्ष का निर्भीक पक्षधर घोषित करना उत्तम है। तटस्थता की अपेक्षा यह नीति सदैव अधिक लाभकर सिद्ध होगी।

- मैकियावेली

वनवासियों को अपने साथ मिलाइए। देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मुख्यधारा से उन्हें जोड़िये, जिससे वे हमारे विशेषाधिकारों और कर्तव्यों में अपना हिस्सा प्राप्त कर सकें। इनके प्रति अलगाव और पृथकता की नीति खतरनाक है और इससे राष्ट्रीय एकात्मता की जड़ों पर प्रहार होता है।

- पूज्य ठक्कर बापा

अनुभव के बोल

असीम शक्ति-आत्मविश्वास

– अतुल जोग, अ. भा. संगठन मंत्री

तेजपुर शहर में वनवासी युवाओं की राज्य स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा किया गया था। तेजपुर एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नगरी है, जिसका पौराणिक नाम शोणितपुर है। असमिया भाषा में चूँकि शोणित अर्थात खून को तेज कहते हैं, इस नगर को कालान्तर में तेजपुर कहा जाने लगा। महाभारत काल में यहाँ बलिपुत्र बाणासुर का राज्य था। बाणासुर की पुत्री ऊषा ने अपने पिता को बताये बिना श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध से गंधर्व विवाह कर लिया। इस बात का पता चलने पर बाणासुर ने दोनों को अग्निगढ़ में बंदी बनाकर रख दिया। अपने पौत्र को बाणासुर से मुक्त कराने श्रीकृष्ण द्वारका से यहाँ आये। बाणासुर से उनका युद्ध हुआ। बाणासुर ने अपने को कमजोर पड़ता जानकर अपने आराध्य महादेव शंकर का आह्वान किया। अपने भक्त का मान रखने के लिए महादेव शंकर ने श्रीकृष्ण से युद्ध किया। इसे हरि-हर युद्ध कहा गया। इस कथा का वर्णन श्रीमद्भागवत पुराण में है।

हाँ, हम बात कर रहे थे, तेजपुर शहर में वनवासी युवाओं के राज्य स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता की। उस खेल प्रतियोगिता में असम के विभिन्न जिलों से खिलाड़ी आए थे। ये खिलाड़ी ग्रामीण क्षेत्र से आये थे। प्रतियोगियों का कोई प्रशिक्षण नहीं हुआ था, फिर भी उनका उत्साह देखने लायक था। प्रतियोगिता में मैराथन का आयोजन भी किया था। बालिकाओं की मैराथन 14 कि.मी. दूरी की होती है। मैराथन दौड़ के एक दिन पहले खिलाड़ियों का स्वास्थ्य परीक्षण होता है। डॉक्टर ने सभी खिलाड़ियों की जांच की और प्रियंका नामक एक बोड़ो बालिका को मैराथन दौड़ के लिए स्वास्थ्य के आधार पर अयोग्य घोषित कर दिया। प्रियंका रोने लगी, बार-बार आग्रह करने लगी कि मैं दौड़ सकती हूँ। डॉक्टर बार-बार उसे समझाने का प्रयास कर रहे थे। किंतु वह मान ही नहीं रही थी। डॉक्टर ने नाराज होकर कह दिया दौड़ोगी तो मर जाओगी। प्रियंका भी तपाक से बोली, नहीं मरुँगी। अंत में यह निर्णय किया गया कि प्रियंका को दौड़ने का मौका दिया जाएगा लेकिन उसे Chest Number नहीं दिया जाएगा। अर्थात् वह स्पर्धा में सहभागी नहीं रहेगी। उसने यह शर्त मंजूर कर ली।

दूसरे दिन सबेरे छः बजे खिलाड़ी तैयार होकर मैदान में पहुँचे। सभी उत्साहित थे। लड़कियों की 14 कि.मी. की स्पर्धा आरंभ हुई। सभी के साथ प्रियंका भी दौड़ने लगी। पीछे-पीछे रुग्ण वाहिका भी जा रही थी। यदि किसी को कुछ तकलीफ हुई तो उसे उठाकर एंबुलेन्स में रखने की व्यवस्था की गई थी। आयोजकों को लग रहा था की प्रियंका को चिकित्सा की आवश्यकता पड़ सकती हैं। सभी उत्साह से दौड़ रहे थे। धीरे-धीरे 5 कि.मी., 10 कि.मी. पार हुए। देखते-देखते बालिकाएँ 14 कि.मी. की दौड़ की पूर्णता वाली रेखा के पास आने लगी। वहां पर टाइम कीपर और रेफरी खड़े थे। और एक लड़की तेजी से आगे बढ़ते हुए जीत गई। देखा कौन है तो वह प्रियंका थी। उसने वहाँ पहुँचकर आयोजकों को पूछा-'और भी दौड़ना है क्या?' *ऐसा आत्मविश्वास देखकर सभी दर्शक अचंभित रह गए।* ■

शिमला में विवेकानंद छात्रावास का शिलान्यास

– कृपाप्रसाद सिंह, अ. भा. उपाध्यक्ष

27 अप्रैल 2018 को शिमला में विवेकानंद छात्रावास का शिलान्यास व भूमिपूजन का कार्यक्रम प्रातः 9 बजे सम्पन्न हुआ। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर, विधान सभा अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल व अ.भा.व कल्याण आश्रम के उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद सिंह ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरुआत की। भूमि पूजन हेतु तीनों महानुभाव पंडित श्री राम शर्मा के साथ बैठे व विधि विधान से भूमि पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न किया। इस अवसर पर आयोजित सभा में कृपा प्रसाद सिंह ने कल्याण आश्रम के सेवा कार्यों एवं गतिविधियों से सभी को अवगत करते हुए कहा कि भारत के 331 वनवासी जिलों में 20,026 सेवा प्रकल्प 14,000 से अधिक स्थानों पर चल रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकूद व ग्राम विकास के कार्यक्रमों से वनवासी बंधुओं के विकास में सहायता की जा रही है।

डॉ राजीव बिंदल ने बताया कि वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्णकालीन कार्यकर्ता के नाते झारखण्ड के सिंहभूम जिले में उन्होने 5 वर्ष कार्य किया है। 1885 से हिमाचल प्रदेश में कार्य प्रारम्भ हुआ और आज शिमला, किन्नोर, सोलन, रामपुर और चंबा में आश्रम कार्यरत है।

लाहोल स्फीति व कुल्लू में भी स्वास्थ्य शिविर एवं संस्कार केंद्र के माध्यम से कार्य चल रहा है। हिमाचल सरकार कल्याण आश्रम के इस कार्य में सभी प्रकार का सहयोग करेगी मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर ने कल्याण आश्रम के कार्य को पवित्र कार्य की संज्ञा देते हुए सेवा कार्यों के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने के कार्य को श्रेष्ठ कार्य बताया। हिमाचल प्रदेश में चल रहे सेवा कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंने उत्तर पूर्व में चल रहे आश्रम के सेवा कार्यों की सराहना की। इस पवित्र कार्य के लिए उन्होंने आश्रम को अपनी तरफ से 5 लाख रुपये की सहायता एवं आश्रम के स्थान तक हिमाचल सरकार द्वारा सड़क बनाने की घोषणा की। भूमि दान करने वाली सन्नी देवी का सम्मान मुख्यमंत्री ने किया। उनके इस दान को श्रेष्ठ दान की संज्ञा उन्होंने दी। वेद के अनुसार भूमि दान महादान है ऐसी घोषणा भी मुख्यमंत्री ने की। इस कार्यक्रम में विधि व शिक्षा मंत्री श्री सुरेश ठाकुर, शिमला नगरपालिका अध्यक्ष क्षेत्र संगठन मंत्री भगवान सहाय, सुरेश कुलकर्णी, अनुराधा भाटिया, वर्षा घरोटे, पाठ निर्माण पदाधिकारी, संघ के प्रान्त प्रचारक, भाजपा के प्रान्त अध्यक्ष श्री पवन जी आश्रम के शिमला समिति की परमिंदर कौर, सुषमा मिनोचा, श्रीमती उमा सूद, उमा शर्मा, उमा गुप्ता, अशोक मिनोचा, अरविन्द बिंदल, निहाल सिंह ठाकुर, शाह मंत्री श्री शर्मा प्रकाश चंद, विजय सिंह ठाकुर आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे। डॉ. राजीव बिंदल ने भी 5 लाख रुपये देने की घोषणा की एवं उनकी अपील पर कुल 22 लाख रुपये की सहायता सभा में भाग लेने वालों ने दी। ■

शोक संवाद

विगत 20 जून 2018 को दक्षिण नगर के अध्यक्ष **श्री जगदीशजी अग्रवाल** का गोलोकवास हो गया। पूर्वांचल कल्याण आश्रम परिवार दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता है। ॐ शान्तिः, शान्तिः शान्तिः।

वनयात्रा के अनुभव

Trip to Sikkim : A great learning opportunity

- Pratibha Agarwal

My parents are active members of Kalyan Ashram but my 13 year old self is too young to do any actual work but I am able to appreciate all the work this organisation does. Enroute to Ranipool, we stopped by the White Water rafting, owing to some extra time. This was an awesome experience. After reaching the hostel in the evening, we joined the students in the prayer hall where they conducted their daily evening prayers. We later joined them for dinner, where we learnt that they did all the chores, so we served them dinner ourselves, feeling that this was the least we could do for such hardworking souls. We went to the Nathula pass the next day. The journey was absolutely breathtaking and we took advantage of the picturesque snow with a thousand photos, it was even worth the motion sickness that followed.We headed out to Namchi, famous for the recreation of the 12 jyotilingas and also visited a very serene monastery. We later went to Kalimpong. We interacted with the students the next morning, and talked about their aspirations and their opinions on patriotism and forceful religious conversion. They sang melodious bhajans for us. After lunch, we headed out to another hostel in Siliguri, where we tried archery, another very exciting experience for me. The trip was a huge learning opportunity for me, seeing them so happy with the minimal facilities they had, and the disciplined life they led inspired me. It also made me realise that we take education for granted, not realizing how fortunate we are, while these children work so hard for it. Being a teenager, these four days spent without my phone, owing to network issues was also a welcome change. ■

जीवन मे एक वनयात्रा जरूर करें

- सीमा पुगलिया

मन में उत्साह लिए मैं सबके साथ रानीपूल के हॉस्टल में पहुँची। वहाँ शाम की प्रार्थना चल रही थी। वहां 20 छात्र पंक्तिबद्ध बैठ कर श्रीराम, दुर्गा और कृष्ण के भजन गा रहे थे। भारत माँ की आरती करके प्रार्थना पूर्ण की। हमारे कल्याण आश्रम के बच्चों की सरलता और आचरण की शुद्धता को देख कर मन प्रसन्न हो गया। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के साथ सिक्किम की सुंदरता का आनंद उठाया। हॉस्टल के बच्चों से वार्तालाप के दौरान यह मालूम पड़ा कि उनके मन में देश के प्रति बहुत प्रेम और समर्पण भाव है। बच्चों ने हमे अपनी निजी भाषा में गीत सुनाया और बीट बॉक्सिंग करके धमाकेदार संगीत का आनंद दिया। हमलोग तीसरे दिन कालिम्पोंग के हॉस्टल पहुँचे । वहाँ के दादा ने बहुत स्वागत किया। नए कमरों को साफ करवा कर हमारे रहने की व्यवस्था करवाई। वहाँ के बच्चे बात करने के लिए आतुर थे। उन्होंने हमारे साथ समय बिताया। उनकी पढ़ाई, खेल कूद आदि के बारे में बातें हुई। हमलोगों ने साथ में बैठ कर हनुमान चालीसा का पाठ किया। दोनों हॉस्टल के बच्चों की सरलता, कर्मठता और सदाचरण को देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। हम लोग सालबाड़ी गए। वहाँ पर अलग-अलग प्रकल्प देखे। सिलाई प्रशिक्षण और चिकित्सा केंद्र देखने का अवसर मिला। एक यात्रा जीवन को बदल सकती है। दुनिया में सब अपने से लगने लगते हैं। व्यक्ति की सोच में परिवर्तन जरूर आता है। मैं सभी से अनुरोध करूँगी कि जीवन में एक वनयात्रा जरूर करें। ■

हमें कार्य का, विचारों का प्रचार करना है : रवीन्द्र साठे

– प्रमोद पेठकर, अ. भा. प्रचार प्रसार प्रमुख

विगत 2, 3 जून को 2018 को मुम्बई के महाराष्ट्र विद्यालय के परिसर में आयोजित प्रचार आयाम के प्रशिक्षण वर्ग में देश भर के 20 राज्यों के 57 कार्यकर्ता सहभागी हुए थे। प्रांत प्रचार प्रमुख के साथ प्रांत से प्रकाशित पत्रिकाओं के संपादक एवं सम्पादन कार्य से जुड़े कार्यकर्ता भी पधारे थे। इस वर्ग में सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सन्दर्भ में प्रशिक्षण दिया गया। पूना के अजिंक्य कुलकर्णी एवं साथी कार्यकर्ताओं ने फेसबुक, व्हाट्स-अप जैसे सोशल मीडिया से जुड़े प्रचार माध्यमों पर किस प्रकार काम किया जाये इसकी जानकारी दी।

दो दिवसीय इस वर्ग में इण्डिया टूडे के किरण तारे, जी 24 के मुख्य संपादक प्रसाद काथे, ए.बी.पी. माझा के न्यूज प्रोड्यूसर नीतिन भालेराव और मुम्बई में मीडिया के क्षेत्र में अनुभवी प्रमोद बापट भी सत्रों में प्रशिक्षण हेतु पधारे थे। राजस्थान से आई डॉ.राधिका लड्ढा ने पत्रिका प्रकाशन के सन्दर्भ में एक सत्र में सबका मार्गदर्शन किया। वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय अतुलजी जोग का सान्निध्य सबके लिए प्रेरणादायी रहा। अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख प्रमोद पेठकर (दिल्ली) ने प्रशिक्षण वर्ग के आयोजन के बारे में प्रस्तावना प्रस्तुत की और मुम्बई महानगर के अध्यक्ष श्रीरामजी बापट ने धन्यवाद ज्ञापन किया। मंच का सफल संचालन राकेश सिंह (भोपाल) ने किया। पश्चिम क्षेत्र के प्रचार प्रमुख महेश काले और कोकण प्रांत संगठन मंत्री अमित साठे के नेतृत्व में मुम्बई महानगर और कोकण प्रांत के कार्यकर्ताओं ने सारी व्यवस्थाओं का जिम्मा उठाया। ■

भाग्यनगर में अखिल भारतीय नगरीय कार्य बैठक सम्पन्न

– संजय रस्तोगी, दक्षिण बंग प्रांत सहमंत्री

दिनांक 9 व 10 जून 2018 को भाग्यनगर, तेलंगाना प्रांत में अखिल भारतीय नगरीय बैठक आयोजित की गई जिसमें देश भर के प्राय: सभी प्रांतों से 99 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वर्ग का उद्घाटन माननीय सोमैया जुलू, अ.भा.नगरीय प्रमुख श्री शंकरलाल अग्रवाल व श्री भगवान सहाय जी ने भारतमाता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। प्रथम सत्र में माननीय भगवान सहाय जी ने नगरीय कार्य की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि कल्याण आश्रम समाज के द्वारा समाज के बीच कार्य करने की कार्य शैली में विश्वास रखता है। इस निश्चय की शुरुआत तब हुई जब मध्य भारत के शिक्षा मंत्री ने वनवासी कल्याण आश्रम के अनुदान को रद्द कर दिया। इस बात की चर्चा हमारे संस्थापक अध्यक्ष स्व.श्री बालासाहब देशपांडे ने बड़े दु:ख के साथ तत्कालीन सरसंघचालक परम पूजनीय गुरूजी के साथ की तब उन्होंने हँसकर उत्तर दिया कि **'समाज का काम हमेशा समाज के द्वारा होना चाहिए।'** तब से आज तक इस मंत्र को आत्मसात् कर वनवासी कल्याण आश्रम कार्य कर रहा है। मा. शंकरजी अग्रवाल ने कल्याण आश्रम के मूल मंत्र 'तू-मैं एक रक्त' को नगरीय लोगों तक पहुँचाने एवं समाज में समरसता का भाव जागृत करने पर बल दिया। 10 विभिन्न सत्रों में नगरीय कार्य के विभिन्न आयामों की चर्चा हुई। गोपालजी केशरी ने युवा वर्ग की सहभागिता एवं श्रीमती सीमा रस्तोगी ने बंगाल के महिला कार्यों की जानकारी दी। समापन सत्र में माननीय सोमैयाजी ने वनवासी समाज की चुनौतियों के बीच समर्पण भाव से कार्य करने की प्रेरणा दी। ■

ईश वंदना और राष्ट्रभक्ति के स्वर साथ–साथ गूंजे रामकथा में

– तारा माहेश्वरी

पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा आयोजित **'राम कथा'** का आयोजन पुरुषोत्तम मास में 19 मई से 27 मई 2018 तक 'दी स्टेडल' (युवा भारती क्रीड़ांगण, साल्टलेक स्टेडियम) में रोजाना 2 बजे से सायं 6 बजे तक सम्पन्न हुआ। पूज्या सुश्री विजया उर्मलियाजी के श्रीमुख से रामचरितमानस के सारगर्भित एवं मार्मिक प्रसंगों का रसपान कोलकाता की धर्मप्राण जनता ने आनन्द विभोर होकर किया। इस कथा का हेतु गोसाबा (सुन्दरवन) में लगभग 100 बालिकाओं के लिए छात्रावास के निर्माण को पूर्ण करना है। लगभग 6 वर्ष पूर्व गोसाबा में 16 वनवासी बालिकाओं से प्रीतिलता छात्रावास प्रारम्भ किया गया था। समय एवं परिस्थितियों की मांग को देखते हुए इसके पूर्ण विकास की योजना बनी एवं निर्माण कार्य 2016 में प्रारंभ किया गया। खेल का मैदान, जलाशय, कुटीर उद्योग का प्रशिक्षण तथा साग-सब्जी की खेती की योजना है। बालिकाओं में धर्म एवं संस्कृति प्रेम का संवर्धन हो एवं वे शिक्षित हों, आत्मनिर्भर हों इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस छात्रावास का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। कथा के दौरान प्रीतिलता छात्रावास की 40 बालिकाएं आई। उन्होंने भजन एवं श्लोकों का सुमधुर गायन कर सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। वनवासी समाज में पली बढ़ी बालिकाओं ने हमारी मूल संस्कृति का अवलोकन करा दिया। अनुशासित जीवन जीने वाली छात्राओं का सूर्योदय से पूर्व ही उठकर कार्यक्रम प्रारंभ हो जाते हैं और वे बड़ी तन्मयता से सभी कार्यों में रुचि रखते हुए एवं सीखने का प्रयास करते हुए आगे बढ़ रही है। भारतवर्ष की भावी पीढ़ी संस्कारों एवं संस्कृति का समायोजन (समावेश) करती हुई तैयार हो रही हैं। इस कथा का उद्घाटन सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री अशोक तोदी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। कथा की मुख्य यजमान थी श्रीमती ऊषा किरण गुप्ता। कथा आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री बजरंग अग्रवाल एवं विशिष्ट सहयोगी श्री राजेश अग्रवाल की कथा की सफलता में मुख्य भूमिका रही। वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय अध्यक्ष माननीय जगदेव राम उरांव, उपाध्यक्ष श्री कृपाप्रसाद सिंह, छात्रावास प्रमुख श्री निशिकांत जोशी, पूर्व क्षेत्र के क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री राजेन्द्र मादला, अखिल भारतीय क्रीड़ा प्रमुख श्री शक्तिपद ठाकुर, अखिल भारतीय सह महिला प्रमुख सुश्री वीणापाणिदास शर्मा एवं अनेक वरिष्ठ अधिकारी तथा समाज के गणमान्य महानुभावों ने कथा का आनन्द लिया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य माननीय गुणवंतसिंह कोठारी भी दो दिन कथा में उपस्थित रहे।

> श्रीराम को कम शब्दों में परिभाषित करना हो तो कहा जा सकता है कि प्रसन्नता, आनन्द और उल्लास का नाम ही श्रीराम है। भयंकर कष्टों एवं आपदाओं के बीच भी उनके चेहरे पर अवसाद की रेखाएं कभी नहीं उभरी। हँसती हुई मानवता का नाम श्रीराम है।

श्रीराम के चरित्र का भावपूर्ण विवरण करते हुए कथावाचिका सुश्री विजयाजी ने कहा कि श्रीराम को कम शब्दों में परिभाषित करना हो तो कहा जा

सकता है कि प्रसन्नता, आनन्द और उल्लास का नाम ही श्रीराम है। भयंकर कष्टों एवं आपदाओं के बीच भी उनके चेहरे पर अवसाद की रेखाएं कभी नहीं उभरी। हँसती हुई मानवता का नाम श्रीराम है। प्रतिदिन प्रसंगानुरूप मनोरम झांकियों का जीवन्त प्रदर्शन किया जाता था। चतुर्थ दिन गौरी पूजन के प्रसंग को नवीन आयाम देते हुए प्रीतिलता छात्रावास की बालिकाओं को बुलाकर उनका वंदन पूजन किया गया। इस कार्यक्रम ने श्रोताओं पर गहरी छाप छोड़ी। धनुष यज्ञ के समय जानकी जी गौरीपूजन के लिए जाती हैं। हमारे यहाँ पर शुभ कार्यों के दौरान गौरी पूजन की परम्परा रही है। छात्रावास की 40 बालिकाओं ने गौरी रूप में गुलाबी वस्त्र धारण कर सभामंडप में प्रवेश किया तो सभी श्रोतागण भाव विभोर हो गये मानों मां गौरी अपने चालीस रूपों में प्रकट हुई हो। उनके पाँव पखारने के लिए सभी महिलाएं मानों सागर की लहरों के समान आने लगी। गौरी पूजन योजना के अन्तर्गत लगभग 60 महिला-पुरुषों ने वनवासी बालिकाओं का यथोचित पूजन सत्कार किया। उनके भाल पर रोली, अक्षत का तिलक लगाकर यजमान यह महसूस कर रहे थे मानों साक्षात् जगदम्बा का पूजन कर रहे हों। पूरा हॉल खचाखच भरा इस दृश्य का अवलोकन करते हुए गद्‌गद् हो रहा था। इस पवित्र आयोजन में प्रथम आहुति स्वयं विजयाजी ने व्यासपीठ से उतरकर कन्यावंदन करके दी। बहुत ही भावुक एवं मर्मस्पर्शी दृश्य उपस्थित हुआ। इन पूजन के पीछे एक ही प्रेरणा थी कि सदियों से उपेक्षित वनवासी समाज हमसे समरस हो, राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़े, शिक्षा एवं संस्कारों के आलोक से आलोकित हो। विजया जी ने कथा के माध्यम से परिवारों को सुन्दर संदेश दिया कि परिवारों में प्रतिस्पर्धा नहीं सहयोग के भाव पुष्ट होने चाहिए। भौतिक सुखों की अंधी दौड़ में भागता मानव अपनी जड़ों से न कटे। समस्त जीवों के लिए कल्याणकारी हो वही धर्म है, परस्पर सहयोग से ही मानव उन्नति पथ पर अग्रसर हो सकता है। कथा के आठवें दिन सुन्दरकाण्ड के सस्वर सामूहिक पाठ का सभी श्रोताओं ने आनन्द लिया। समवेत स्वर में सुन्दरकाण्ड के पाठ से पूरा सभा मण्डप गुंजायमान हो उठा। पूर्वांचल कल्याण आश्रम की ओर से सभी भक्तों को सुन्दरकाण्ड की पुस्तकें वितरित की गई। प्रतिदिन अलग-अलग श्रृंगार, प्रसाद एवं दैनिक यजमान के रूप में विभिन्न महानुभावों ने कथा में सहयोग किया। कथा आरंभ से पूर्व महिला समिति की बहनों द्वारा राष्ट्र गीत प्रस्तुत किया जाता था। कथा के विशिष्ट सहयोगियों, यजमानों, गणमान्य विभूतियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का अंगवस्त्र ओढ़ाकर एवं प्रतीक चिन्ह के रुप श्रीराम-हनुमान की गले मिली छवि भेंट स्वरुप प्रदान कर अभिनंदन किया गया। कथा समापन के पश्चात कथावाचिका विजयाजी ने कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं को प्रेरक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कल्याण आश्रम के कार्य को पवित्र कार्य की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि कल्याण आश्रम सेवाकार्य के माध्यम से राष्ट्रीयता जागृत करने का काम कर रहा है। कार्यकर्ता इस कार्य के माध्यम से अपने व्यक्तित्व में दैवीय गुण का स्वत: ही अर्जन कर पाएंगे, ऐसा विश्वास प्रकट किया। कथा समाप्ति के बाद सभी ने परिवार सहित स्वरुचि भोज का आनन्द लिया। कुल मिलाकर इस कथा द्वारा महानगर में वनवासी समाज के प्रति दायित्व बोध एवं चैतन्य जागरण का कार्य प्रभावी रूप से सम्पन्न हुआ। ■

1855 में संथाल परगना से जगी थी आजादी की अलख

स्वाधीनता संग्राम में 1857 ई. एक मील का पत्थर है; पर वस्तुत: यह समर इससे भी पहले प्रारम्भ हो गया था। वर्तमान झारखंड के संथाल परगना क्षेत्र में हुआ **'संथाल हूल'** या **'संथाल विद्रोह'** इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। संथाल परगना उपजाऊ भूमि वाला वनवासी क्षेत्र है। वनवासी स्वभाव से धर्म और प्रकृति के प्रेमी तथा सरल होते हैं। इसका जमींदारों ने सदा लाभ उठाया है। कीमती वन उपज लेकर उसी के भार के बराबर नमक जैसी सस्ती चीज देना वहां आम बात थी। अंग्रेजों के आने के बाद ये जमींदार उनसे मिल गये और संथालों पर दोहरी मार पड़ने लगी। घरेलू आवश्यकता हेतु लिये गये कर्ज पर कई बार साहूकार 50 से 500 प्रतिशत तक ब्याज ले लेते थे।

1789 में संथाल क्षेत्र के एक वीर बाबा तिलका मांझी ने अपने साथियों के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध कई सप्ताह तक सशस्त्र संघर्ष किया था। उन्हें पकड़ कर अंग्रेजों ने घोड़े की पूंछ से बांधकर सड़क पर घसीटा और फिर उनकी खून से लथपथ देह को भागलपुर में पेड़ पर लटका कर फांसी दे दी। 30 जून, 1855 को तिलका मांझी की परम्परा के अनुगामी दो सगे भाई सिदो और कान्हू मुर्मू के नेतृत्व में 10,000 संथालों ने इस शोषण के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इनका जन्म भोगनाडीह गांव में हुआ था। उन्होंने एक सभा में **'संथाल राज्य'** की घोषणा कर अपने प्रतिनिधि द्वारा भागलपुर में अंग्रेज कमिश्नर को सूचना भेज दी कि वे 15 दिन में अपना बोरिया-बिस्तर समेट लें। इससे बौखला कर शासन ने उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया; पर ग्रामीणों के विरोध के कारण वे असफल रहे। अब दोनों भाइयों ने सीधे संघर्ष का निश्चय कर लिया। इसके लिए शालवृक्ष की टहनी घुमाकर क्रांति का संदेश घर-घर पहुंचा दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि उस क्षेत्र से अंग्रेजों का शासन लगभग समाप्त ही हो गया। यह देखकर शासन ने मेजर बूरी के नेतृत्व में सेना भेज दी। पांच घंटे के खूनी संघर्ष में शासन की पराजय हुई और संथाल वीरों ने पकूर किले पर कब्जा कर लिया। सैकड़ों अंग्रेज सैनिक मारे गये। इसके कम्पनी के अधिकारी घबरा गये। अत: पूरे क्षेत्र में 'मार्शल ला' लगाकर उसे सेना के हवाले कर दिया गया। अब अंग्रेज सेना को खुली छूट मिल गयी। अंग्रेज सेना के पास आधुनिक शस्त्रास्त्र थे, जबकि संथाल वीरों के पास तीर-कमान जैसे परम्परागत हथियार। अत: बाजी पलट गयी और चारों ओर खून की नदी बहने लगी।

इस युद्ध में लगभग 20,000 वनवासी वीरों ने प्राणाहुति दी। प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार हंटर ने इस युद्ध के बारे में अपनी पुस्तक 'एनल्स ऑफ रूरल बंगाल' में लिखा है, ''संथालों को आत्मसमर्पण जैसे किसी शब्द का ज्ञान नहीं था। जब तक उनका ड्रम बजता रहता था, वे लड़ते रहते थे। जब तक उनमें से एक भी शेष रहा, वह लड़ता रहा। ब्रिटिश सेना में एक भी ऐसा सैनिक नहीं था, जो इस साहसपूर्ण बलिदान पर शर्मिन्दा न हुआ हो।'' इस संघर्ष में सिदो और कान्हू के साथ उनके अन्य दो भाई चांद और भैरव भी मारे गये। इस घटना की याद में 30 जून को प्रतिवर्ष 'हूलदिवस' मनाया जाता है। भारत सरकार ने भी वीर सिदो और कान्हू की स्मृति को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए एक डाक टिकट जारी किया है। ■

(संदर्भ : स्वतंत्रता सेनानी सचित्र कोश)

प्रस्तुतकर्ता: योगेश पारेख

अनपेक्षित और अनायास मिली खुशियां, छात्रावास की बहनों के साथ!

– सुप्रिया बैद

गांव से आयी वो लड़कियां जिन्होनें मेट्रो रेलवे कभी नहीं देखी, ना ही वो ये जानतीं हैं कि चलायमान सीढ़ी या शहरी भाषा में एस्केलेटर किस बला का नाम है; उनके साथ शहर की पढी लिखी, प्रगतिशील लड़की को समय बिताना पड़े, तो वह इस विचार से ही घबरा जाये। मेरे पास भी यह मौका आया तो बहुत उत्साहित तो नहीं थी मैं। मुझे कहा गया कि प्रीतिलता एवं निवेदिता कन्या छात्रावास से कुछ लड़कियां सिलाई सीखने कोलकाता आयी हुई हैं, उन्हें फ़िल्म दिखानी है और उनके साथ थोड़ा वक्त गुज़ारना है। मैं बिना किसी पूर्व धारणा के उनसे मिलने गई। पर उनके साथ बिताया हुआ वक्त मेरी कल्पना से कहीं अधिक सार्थक सिद्ध हुआ। मेरे आने की पूर्व सूचना उनके पास पहले से थी, इसलिये जैसे ही मैं लिफ़्ट से कल्याण भवन के चौथे माले पर पहुंची ४-५ लड़कियां मेरे स्वागत के लिए खड़ी थी। उनके हाव-भाव ऐसे थे जैसे कि मेरे रुप में उनके समक्ष कोई मशहूर सेलीब्रिटी आया हो। स्वागत-सत्कार का यह सिलसिला जो यहां से शुरु हुआ, वो मेरे रहने के पूरे समय तक चलता रहा। सारी लड़कियों ने आकर मुझे घेर लिया, मुझसे बातें करने लगीं, मुझे अपना समय देने के लिये धन्यवाद देने लगीं। मेरे साथ अलग से तस्वीर खिंचवाने की ज़िद करने लगी। मैं समझ नहीं पायी कि इतने प्यार और सम्मान को अर्जित करने के लिये मैने किया क्या है ? नाश्ते का समय आया तो सब मुझे अपनी थाली से एक एक कौर खिलाने लगीं, इस प्रक्रिया में स्वयं उनके लिये ही खाना कम पड़ गया किन्तु न और खाना मांगने गयीं न कोई शिकायत की। शिकायत तो किसी भी बात की नहीं-एक ही हॉल में गर्मी में लगभग ४० लड़कियां एक साथ बिस्तर लगाकर सोती हैं, पर उसमें उन्हें कोई आपत्ति नहीं। मैं उनकी निश्छलता और ज़िन्दादिली देखकर अभिभूत हुई। उनके आग्रह पर मैं रात्रि भोजन के लिये वहां रुकी पर जाते समय उन्होनें एक और मांग कर डाली- यह कि मैं अगले दिन उनके साथ आकर रहूं। अपनी व्यस्तता को देखते हुए शायद यह मांग मैं ठुकरा देती, पर उनका प्यार मेरी व्यस्तता पर भारी पड़ गया। मैं उन्हें ना ही नहीं कर पाई। ऐसा लगने लगा कि उनके प्यार के सामने मैं बहुत छोटी हूं और ना करना अपने छोटेपन को सिद्ध करना होगा। अगले दिन मैं रात्रि निवास की तैयारी के साथ वहां पहुंची। वही प्यार, वही सम्मान, वही उत्साह मिला। मुझे पानी देना, भोजन करवाना आदि में वो अपना सौभाग्य समझने लगीं। मेरे हर कार्य की तारीफ़ करने लगीं। साथ में नाचना-गाना चला, बातें चलीं। उनकी बातों से बहुत सी बातें मेरे जेहन में आने लगीं- शहरी लोगों की शिकायती मानसिकता, ईर्ष्यालु वृत्ति आदि। हम छोटी छोटी बातों में शिकायतें करते हैं और एक दूसरे की तारीफ़ करना तो और भी दूर की बात है। ईर्ष्या ज्यादा सहज है हमारे लिये, प्रोत्साहन नहीं। वहां मैनें देखा कि लड़कियां बात-बात में अपनी नहीं, या तो मेरी या एक दूसरे की तारीफ़ कर रही थीं, और उस तारीफ़ में अपनत्व था, किसी तरह

का कोई छलावा नहीं। रात्रि भोजन के पश्चात् उन्होनें अपने हाथ से सिले हुए कपड़े दिखाये जो उन्होंने इसी सिलाई कार्यशाला में सीखे थे। कुछ लोगों के हाथ की कारीगरी देखकर मैं दंग रह गयी। इतने कम समय में ऐसी सिलाई कर पाना मेरे लिये तो सम्भव नहीं था। इन सीधी साधी गांव की लड़कियों में अद्‌भुत कला है। ये कला इनकी संगीत और नृत्य प्रस्तुतियों में भी स्पष्ट नज़र आई। कला के साथ साथ अनुशासन, उठने सोने की नियमितता, भोजन, आरती, पढाई, सफ़ाई, हर काम में उनकी निष्ठा और बारीकियां देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गयी। और ये भी पता चला कि इन साधारण सी दिखने वाली लड़कियों के सपने नेक और ऊंचे हैं। इनमें से कोई नर्स बनना चाहती है, कोई पुलिस अफ़सर, कोई न्यायाधीश, कोई डॉक्टर तो कोई शिक्षक और यह बनकर वे समाज की सेवा करना चाहती थीं। यह जानकर मन में उनके लिये सम्मान और बढ गया। रात को सोने के लिये मेरे लिये सबसे अच्छी जगह का चुनाव कर, ठीक पंखे के नीचे उन लड़कियों ने मेरे लिये बिस्तर लगा दिया। मुझे कोई भी असुविधा न हो इसका पूरा ध्यान रखते हुए। जाहिर है– उन्होनें अपनी चादर और तकिये का प्रयोग किया। उनका व्यवहार मुझे इतना छू गया कि तीसरे दिन शाम को मैं फ़िर उनसे मिलने गयी। उनकी खुशी का तो जैसे ठिकाना ही नहीं रहा। और इस तरह १–२ घंटे की जगह मैने उनके साथ ३ दिन बिताये।

अपने आंसूओं के साथ उन्होंने मुझे विदा किया; मुझे ढेर सारी खुशियों और स्मृतियों की सौगात देकर। ■

वृक्षारोपण

– दीपशिखा अग्रवाल

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की युवा समिति द्वारा १ जुलाई २०१८ को वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कुल ३३ सदस्यों ने भाग लिया। सुबह ७ बजे की ट्रेन पकड़ कर खड़गपुर एवं डेढ़ घंटे की बस यात्रा के बाद हम नयाग्राम पहुंचे। वहां के ग्रामीणों ने चन्दन के टीके एवं फूलों से हमारा स्वागत किया। ढोल भी बजाये जा रहे थे। हम सभी हर्षोल्लास से उनके साथ नाचने लगे। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात माननीय अशोक दा एवं प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक ने हमे उस ग्राम की जानकारी दी और फिर हमें ५ टीमों में बांटा गया। अपनी टीम के साथ हम उन घरों की तरफ बढ़ें जहाँ हमें पौधे लगाने थे।

घर में रहने वाली औरतों और बच्चों ने हमारा अभिवादन किया। उन्होंने गर्मी को ध्यान में रखते हुए हमें पानी पिलाया। हम वृक्षारोपण के कार्य में जुट गए। बारी–बारी से हमने मिलकर नारियल एवं आम के पौधे लगाए और यह जानकारी प्राप्त की कि वे कितने दिनों में बढ़ेंगे। फावड़े को कैसे पकड़ना चाहिए, वह भी बताया गया।

ग्रामीणों के घरों में पौधे लगाने से यह लाभ होगा कि उनके फलों से उनका भोजन पूरा होगा एवं उनकी आय भी बढ़ेगी। व्यक्तिगत स्तर पर मैं दो वर्षो से वृक्षारोपण के कार्यक्रम में भाग ले रही हूँ। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष मौसम ज़्यादा गर्म था और मुझे अहसास हुआ कि हम शहरी लोग थोड़ी देर धूप में चलने के बाद ही क्लान्त हो जाते हैं जबकि ग्रामीण लोग बिना रुके उसी धूप में रोज़ाना श्रम करते हैं।

युवा समिति के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने पूरे कार्यक्रम की संयोजना बेहद अच्छे ढंग से की थी। ■

अनुकरणीय

कल्याण आश्रम की विकास यात्रा को अव्याहत रखने में महानगर के परोपकारी महानुभावों का अप्रतिम अवदान रहा है। दक्षिण नगर समिति की कार्यकर्ता श्रीमती अमिता बंका के पिताजी श्री मक्खनलालजी सुल्तानीवाला ने रामकथा के दौरान एक मानस पाठ का संकल्प लिया। अमिताजी ने उन्हें श्रीरामकथा श्रवण हेतु आने का आग्रह किया। व्यस्तता के कारण वे नियमित कथा श्रवण नहीं कर पाए किन्तु अन्तिम दिन कथा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की औपचारिकतावश वे आए।

कथा के सात्विक वातावरण, कार्यकर्ताओं की ध्येयनिष्ठा एवं श्रम तथा विदुषी उर्मलियाजी की कथा शैली से इतने प्रभावित हुए कि सायं 6 बजे तक भोजन किए बिना वे कथामृत का पान करते रहे। अखिल भारतीय नगरीय प्रमुख श्री शंकर अग्रवाल द्वारा निर्माणाधीन गोसाबा छात्रावास के बारे में जानकर स्वेच्छा से एक कमरे के निर्माण का अनुदान दिया। वे स्वयं को धन्य अनुभव कर रहे थे कि उनकी पुत्री अमिता इस पवित्र कार्य से जुड़ी हैं एवं बेटी भी पिता का स्नेहिल हाथ एवं समर्थन इस कार्य को प्राप्त है यह सोचकर भावविभोर थी।

मक्खनलालजी की भांति समाज के अनेकानेक महानुभावों का उदार सहयोग वनवासी सेवा एवं संगठन कार्यों हेतु निरन्तर मिल रहा है तथा अनेक संस्कृति प्रेमी बंधु संस्था से जुड़ते जा रहे हैं। कल्याण आश्रम परिवार सभी सहयोगकर्ताओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कामना करता है कि पूरा समाज हमारे गतिविधियों को इसी प्रकार नवोन्मेष प्रदान करता रहे। ■

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

पूर्वांचल कल्याण आश्रम एवं जीण माता मन्दिर के संयुक्त तत्वावधान में विगत १६ एवं १७ जून २०१८ को खड़गपुर के वनवासी अंचलों में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। प्रथम दिन ३४५ रोगियों एवं द्वितीय दिन ३०५ रोगियों का स्वास्थ्य परीक्षण हुआ। ६५ नग चश्मे वितरित किए गये। १० वनवासी बंधुओं को कोलकाता बुलाकर चक्षु शल्य क्रिया कराई जायेगी। ज्ञातव्य है कि इस शिविर में ५ वरिष्ठ चिकित्सक, ४ मेडिकल छात्र एवं १० कार्यकर्ता उत्साहपूर्वक सहभागी हुए। ■

सामूहिक विवाह आयोजन

सेवा समर्पण संस्थान (वनवासी कल्याण आश्रम, पश्चिमी उत्तर प्रदेश) द्वारा उत्तर प्रदेश की लगभग सबसे पिछड़ी सहरिया जनजाति की 23 कन्याओं का विवाह अक्षय तृतीया के दिन ललितपुर (उत्तर प्रदेश) में सम्पन्न हुआ जिसमें नगर व प्रशासन के गणमान्य नागरिकों ने उपस्थित रहकर सभी जोड़ों को आशीर्वाद दिया। ■

अभिनंदन

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की मध्य हावड़ा समिति के संयोजक श्री मधुसूदन–अलका सरावगी के सुपुत्र श्री आदित्य सरावगी ने Neet (National Eligibility Test for admission in Medical College) में अखिल भारतीय स्तर पर ३९वां स्थान हासिल करके परिवार, समाज तथा हम सबका गौरव बढ़ाया है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि आदित्य जीवन के हर क्षेत्र में नई ऊँचाइयां हासिल करे। बधाई ! ■

बोधकथा.........

परोपकार

मोची का काम करने वाले एक व्यक्ति को रात में भगवान ने सपने में कहा–'कल सुबह मैं तुझसे मिलने तेरी दुकान पर आऊंगा।' मोची की दुकान काफी छोटी थी और उसकी आमदनी भी सीमित थी। खाना खाने के बर्तन भी थोड़े से थे। इसके बावजूद वो अपनी जिंदगी से खुश रहता था। वह एक सच्चा ईमानदार और परोपकार करनेवाला इंसान था। इसलिए ईश्वर ने उसकी परीक्षा लेने का निर्णय लिया। मोची ने सुबह उठते ही तैयारी शुरू कर दी। भगवान को चाय पिलाने के लिए दूध, चायपत्ती और नाश्ते के लिए मिठाई ले आया। दुकान को साफ कर वह भगवान का इंतजार करने लगा। उस दिन सुबह से भारी बारिश हो रही थी। थोड़ी देर में उसने देखा कि एक सफाई करने वाली महिला बारिश के पानी में भीगकर ठिठुर रही है। मोची को उसके ऊपर बड़ी दया आयी। उसने भगवान के लिए लाए गये दूध से उसको चाय बनाकर पिलाई। दिन गुजरने लगा। दोपहर बारह बजे एक महिला बच्चे को लेकर आयी और कहा–'मेरा बच्चा भूखा है। इसके लिए दूध चाहिए।' मोची ने सारा दूध उस बच्चे को पीने के लिए दिया। इस तरह शाम के चार बज गए। मोची दिन भर बड़ी बेसब्री से भगवान का इंतजार करता रहा। तभी एक बूढ़ा आदमी जो चलने से लाचार था आया और बोला–'मैं भूखा हूँ। अगर कुछ खाने को मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी होगी।' मोची ने उसकी बेबसी को समझते हुए मिठाई उसको दे दी। इस तरह से दिन बीत गया और रात हो गई। रात होते ही मोची के सब्र का बांध टूट गया और वह भगवान को उलाहना देते हुए बोला–'वाह रे भगवान! सुबह से रात कर दी मैंने तेरे इंतजार में, लेकिन तू वादा करने के बाद भी नहीं आया।' तभी आकाशवाणी हुई और भगवान ने कहा–मैं आज तेरे पास एक बार नहीं तीन बार आया। तीनों बार तेरी सेवाओं से बहुत प्रसन्न हुआ। तू मेरी परीक्षा में भी उत्तीर्ण हुआ, क्योंकि तेरे मन में परोपकार और त्याग का भाव सामान्य मानव की सीमाओं से परे है। ■

कविता.........

मुक्तक

क्रान्ति की कल्पना काव्य का कर्म है
प्रीति हर पन्थ के ग्रन्थ का मर्म है,
मज़हबों के मुरीदों, हमारे लिये
राष्ट्र ही देवता, राष्ट्र ही धर्म है।

इससे बढ़कर कोई पाठशाला नहीं
इससे ऊँचा कोई भी शिवाला नहीं,
इसमें रहना है तो इसके होकर रहो
देश है ये कोई धर्मशाला नहीं।

वंचनाओं के चषक हँसकर पिये हैं
बाँसुरी ले व्याल के फन पे जिये हैं,
क्रुद्ध लहरों से प्रकम्पित हों घरौंदे
दस्तखत हमने शिलाओं पे किये हैं।

आँख के बेशर्म पानी के लिये धिक्कार है
सर्द लहू की रवानी के लिये धिक्कार है,
देखकर जो जख्म माँ के वक्ष पे खामोश है
उन जवानों को जवानी के लिए धिक्कार है।

- डॉ. शिवओम अम्बर

कथामृत का रसपान करते भक्तगण

रामकथा के श्रवण का हेतु स्वयं राम सम हम बन जाएं;
अंतर के रावण को भेद कर रामराज्य धरती पर लाएं।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram
161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com